



जाएँ टॉरटिस की इवोल्यूशनरी हिस्ट्री की जांच के दौरान, पूर्व में अज्ञात, विलुप्त हो चुके एक कछुए के बारे में पता चला है। कम से कम एक हजार साल पहले मैडागास्कर में एक विशालकाय कछुआ विचरता था, भर-भर कर पौधे खाता था। नए शोध में सामने आया है कि, मैग्नाथी की तरह ही कछुए की यह प्रजाति लुप्त हो गई है। मैडागास्कर व पश्चिमी हिंद महासागर के अन्य द्वीपों में रहने वाले जाएँ टॉरटिस की रहस्यमय वंशावली का अध्ययन करते समय वैज्ञानिकों को इस प्रजाति के बारे में पता चला। लुप्त कछुए की टांग की "लोअर लैंग बोन" (सिंगल टिबिया) अचानक मिलने पर उन्होंने इसके न्युक्लियस व माइटोकॉण्ड्रियाल डी.एन.ए. का विश्लेषण किया तथा निर्धारित किया कि यह एक नई प्रजाति है। उन्होंने फ्रांस के वैज्ञानिक रॉजर बोर के नाम पर इसे एस्ट्रोचेलिस रॉजर बोरी नाम दिया। यह शोध जर्नल साईन्स एडवांटेज में छपा है। यह स्पष्ट नहीं है कि, यह प्रजाति कब लुप्त हुई थी। लेकिन जिस हड्डी का अध्ययन हुआ है, वह 1000 साल पुरानी लगती है। सत्रहवीं सदी में जब वैज्ञानिकों ने जाएँ टॉरटिस के जीवाश्म एकत्रित करने शुरू किए तब तक मैडागास्कर के जाएँ टॉरटिस की आबादी काफी पहले ही लुप्त हो गई थी। संभवतया इसका कारण यह था कि, 1000 साल पहले यहाँ इंडो-मलय लोगों ने बसना शुरू कर दिया था। इसके अलावा यूरोपियन नाविक भी भोजन व टर्टल ऑइल के लिए इनका अंधाधुंध शिकार करते थे। अलडाबरा के अलावा सभी द्वीपों से कछुए 19 वीं सदी तक लुप्त हो गए थे। शोध के लिए सैमंड्स और उनके सहयोगियों ने कई टॉरटिस जीवाश्मों से माइटोकॉण्ड्रियल जीनोम बनाए। इनके विश्लेषण से टीम यह बता पाई कि जाएँ टॉरटिस ने हिंद महासागर के विभिन्न द्वीपों में कैसे माइग्रेसन किया। उदाहरण के लिए, कछुओं की विलुप्त प्रजाति पैस्करनी सिलिनड्रैसिडस संभवतः 33 मिलियन वर्षों से भी पहले अफ्रीका छोड़कर रीयूनियन वॉल्कैनिक हॉटस्पॉट पर बस गई थी। वर्तमान में यह स्थान इण्डियन ओशन में रीयूनियन द्वीप के नीचे पानी में डूबा हुआ है। यहाँ से यह प्रजाति स्थानीय द्वीपों पर फैली जिससे, पांच पैस्करनी प्रजातियाँ बनीं।

क्या प्रदर्शन के दौरान भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया की हत्या करने का षडयंत्र था?

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा गुट के सांसद किरोड़ीलाल मीणा के समर्थकों के हाथों में डंडे, सरिये और पत्थर थे?

जयपुर, 12 मार्च (का.सं.)। राजधानी जयपुर में 11 मार्च को भाजपा के प्रदर्शन की चर्चा जयपुर से लेकर दिल्ली तक है, जो भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया, उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, सांसद घनश्याम तिवाड़ी, वरिष्ठ नेता ओमप्रकाश माथुर, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरण चतुर्वेदी इत्यादि वरिष्ठ नेताओं को मौजूदगी में किया गया। इस प्रदर्शन में सतीश पूनिया के खिलाफ सांसद किरोड़ीलाल मीणा समर्थकों द्वारा नारेबाजी की चर्चा जोरों पर है। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया के खिलाफ नारेबाजी मामले पर प्रदेश प्रभारी अरुण सिंह ने कहा कि, भाजपा के कार्यकर्ता ऐसे नहीं हो सकते, यह शरारती लोग हैं जिन्होंने नारे लगाए, इस घटना की जितनी निंदा की जाए उतनी कम है, भाजपा इस मामले को गंभीरता से लेगी।

गौरतलब है कि, यह आंदोलन सांसद किरोड़ीलाल मीणा, सांसद रंजीता कोली के साथ पुलिस द्वारा किये गये अलोकतांत्रिक रवैये के खिलाफ गया, जिसमें राज्य सरकार से वीरांगनाओं की मांगों के समर्थन में भी आवाज उठाई गई। यह भाजपा की तरफ से घोषित आंदोलन नहीं था, लेकिन राजेन्द्र राठौड़ ने 10 मार्च को मीडिया से बातचीत में 11 मार्च को सुबह 11 बजे भाजपा प्रदेश कार्यालय पर आंदोलन करने की घोषणा कर दी। जिसमें प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया सहित पार्टी के तमाम वरिष्ठ नेताओं, सांसदों व विधायकों को आमंत्रित किया गया। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा गुट के सांसद किरोड़ीलाल मीणा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया के खिलाफ कई बार बयान दे चुके हैं और 11 मार्च को भाजपा प्रदेश कार्यालय के बाहर किये गये प्रदर्शन के दौरान

■ किरोड़ीलाल मीणा के समर्थन में नारे लगाने वाले उपद्रवियों ने पुलिस की बसों के शीशे तोड़े, सतीश पूनिया के खिलाफ भी नारे लगाये।

■ क्या उपद्रवी किसी बड़ी राजनीतिक साजिश के तहत सतीश पूनिया की हत्या करने के षडयंत्र से प्रदर्शन में शामिल होने आये थे?

■ सतीश पूनिया की सुरक्षा को लेकर राज्य सरकार की कार्यशैली पर सवाल खड़े हो रहे हैं, जयपुर से से पहले कोटा में भी उन पर हमला हो चुका है।

किरोड़ीलाल मीणा के समर्थकों ने किरोड़ीलाल के समर्थन में नारेबाजी की और सतीश पूनिया के खिलाफ नारेबाजी की। जिसमें यह साफ नजर आ रहा था कि प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे सतीश पूनिया के खिलाफ यह उपद्रवी चारों तरफ से धेरकर टारगेट कर हटिंग, नारेबाजी कर रहे थे और इनमें से कईयों के हाथों में डंडे, सरिया थे और पुलिस की बसों पर पत्थरबाजी भी की।

इन उपद्रवियों की हरकतों से साफ झलक रहा था कि भाजपा के प्रदर्शन को बन्दनाम करने के षडयंत्र में लगे थे, लेकिन भाजपा के नेता और कार्यकर्ता पूरे अनुशासन में रहे, संयमित रहे, इन उपद्रवियों ने पुलिस की बसों पर सरियों, डंडों और पत्थरों से हमला किया तो लगभग तीन बसों के शीशे टूटे। आईपीएस कुंवर राठौड़ पर की मौजूदगी में प्रदर्शन के दौरान गिरफ्तारी प्रक्रिया में जब पुलिस सतीश पूनिया, राजेन्द्र राठौड़ इत्यादि वरिष्ठ नेताओं की बसों से ले जा रही थी तो किरोड़ी मीणा समर्थकों ने कई घंटों तक बसों को जाने नहीं दिया, फिर पुलिस सतीश पूनिया को दूसरी गाड़ी से थाने ले जाने लगी तो उस गाड़ी से किरोड़ी समर्थक लटक

गये, कई किलोमीटर तक गाड़ी का पीछा किया। इनके हाथों में सरिये, डंडे और जेबों में पत्थर तक मौजूद होने की जानकारी मिली है। इसमें से काफी घटनाक्रम किरोड़ी मीणा के फेसबुक पेज पर लाइव किया गया।

पूनिया के खिलाफ किरोड़ीलाल मीणा के समर्थकों द्वारा की गई नारेबाजी और षडयंत्र से प्रदर्शन पर भाजपा कार्यकर्ता, किसान और युवा वर्ग आक्रोशित है, इस पूरे मामले पर केन्द्रीय नेतृत्व नजर बनाये हुये हैं। वही सियासी गलियारों में इस बात की चर्चा है कि पूनिया के नेतृत्व में प्रदर्शन दर्जनों से अधिक आंदोलन किये गये, लेकिन किसी भी आंदोलन में कोई अशांति नहीं हुई, ना उपद्रव हुआ, लेकिन इस 11 मार्च के आंदोलन में ऐसी क्या वजह रही कि किरोड़ी मीणा के समर्थकों ने जो उपद्रव किया। उसमें सतीश पूनिया को टारगेट करके उनके खिलाफ नारेबाजी की गई। भाजपा के आंदोलन को बन्दनाम करने का षडयंत्र किया गया, लेकिन इतना उपद्रव होने के बाद भी प्रदर्शन के दौरान भाजपा नेता व कार्यकर्ताओं ने संयम व अनुशासन का परिचय दिया, जो भाजपा की संस्कृति है। राजनीतिक विश्लेषक

कहते हैं कि किरोड़ी मीणा भाजपा से अलग हटकर सभी आंदोलन कर रहे हैं, खास बात यह है कि भाजपा ने तीन सालों में जितने भी आंदोलन किये हैं, उनमें वसुंधरा राजे, किरोड़ी मीणा और इनके समर्थक तीन चार विधायक सभी आंदोलन से दूर रहे। सियासी गलियारों में चर्चा है कि, संघ षडयंत्र के सतीश पूनिया के नेतृत्व में जनहित के मुद्दों पर भाजपा द्वारा किये गये तमाम आंदोलन, पार्टी के कार्यक्रम, बूथ और पत्रा तक पार्टी की जमीनी मजबूती, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, गृहमंत्री अमित शाह सहित पार्टी के तमाम केन्द्रीय स्तर के नेताओं के राजस्थान के विभिन्न अंचलों में सफल ऐतिहासिक आयोजनों से वसुंधरा राजे गुट राजनीतिक तौर पर परेशान व बेचैन नजर आ रहा है। राजस्थान में भाजपा के कार्यकर्ताओं और किसान वर्गों में यह चर्चा है कि 11 मार्च को जयपुर में हुये प्रदर्शन में किरोड़ी मीणा के समर्थन में नारे लगाने वाले उपद्रवियों ने किसके कहने पर सतीश पूनिया के खिलाफ नारे लगाये? किसके कहने पर बसों के शीशे तोड़े और आखिर किस षडयंत्र के तहत वह हाथों में सरिये, डंडे और पत्थर लेकर आये थे? क्या यह उपद्रवी किसी बड़ी राजनीतिक साजिश के तहत किसी की आशयशिला भी रखेंगे। इस परियोजना से गंतव्यों के बीच यात्रा के समय को पांच घंटे से घटाकर केवल 2.5 घंटे करने की उम्मीद है।

वह बाद में कर्नाटक के उत्तरी हिस्से का भी दौरा करेंगे और 850 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से निर्मित आई.आई.टी. धारवाड़ का उद्घाटन करेंगे। मोदी हबुली रेलवे स्टेशन पर सिद्धारूढ़ स्वामी मंच राष्ट्र को समर्पित करेंगे, जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड

गौरतलब है कि, इससे पहले पिछले वर्ष कोटा से बूंदी जाते समय सतीश पूनिया की गाड़ी पर सैकड़ों उपद्रवियों ने पत्थरों से हमला किया था, ऐसे में सतीश पूनिया की सुरक्षा को लेकर भी राज्य सरकार की कार्यशैली पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

नागालैण्ड में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) से समझौता करना पड़ता है, तो हम महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना (शिंदे गुट) से कैसे लड़ सकते हैं? एन.सी.पी. के फैसले के बाद कांग्रेस और शिवसेना (यू.बी.टी.) के सदस्यों के बीच सब कुछ ठीक नहीं है, लेकिन कांग्रेस और शिवसेना (यू.बी.टी.) के शीर्ष नेतृत्व ने अपने सदस्यों से इस समय सार्वजनिक रूप से शरद पवार के खिलाफ नहीं बोलने की अपील की है। हालांकि, नागालैण्ड में भाजपा के साथ शरद पवार का गठबंधन इस तरह का पहला उदाहरण नहीं है। 2014 में, एन.सी.पी. ने महाराष्ट्र में भाजपा को समर्थन देने का वादा किया।

राज्य विधान सभा की 288 सीटों में से 122 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी भाजपा 23 सीटों से बहुमत में बस हो रही थी। भाजपा तब संभावित सहयोगी की तलाश में थी। चूंकि भाजपा और तत्कालीन अविभाजित शिवसेना ने अलग-अलग चुनाव लड़ा था, इसलिए भगवा दलों में कटुता थी। शरद पवार भाजपा को बिना शर्त समर्थन देने के लिए आगे आए।

भारत और ऑस्ट्रेलिया मिलकर खोजेंगे लिथियम और कोबाल्ट के भण्डार

नई दिल्ली, 12 मार्च (वार्ता)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच लिथियम और कोबाल्ट सहित सूक्ष्म रसायनों के उत्खनन की पांच परियोजनाओं में मिल कर निदेश की दिशा में काम करने पर सहमति बनी है। सरकार ने इसे दोनों देशों के बीच सहयोग में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बताया है। खान मंत्रालय की शनिवार को जारी एक विज्ञापित के मुताबिक केंद्रीय कोयला, खान और संसदीय कार्य मंत्री खनिज और ऑस्ट्रेलिया की खनिज मंत्री मेडेलीन किंग ने शुक्रवार को नई दिल्ली में द्विपक्षीय वार्ता में दोनों देशों के बीच साझेदारी के तहत पांच लक्षित परियोजनाओं की पहचान की है। इनमें दो लिथियम और तीन कोबाल्ट खनन की परियोजनाएं हैं। बयान में कहा गया है कि इन परियोजनाओं पर पर विस्तारपूर्वक तत्परता से आवश्यक कार्य किया जाएगा। दोनों देशों ने सहयोग बढ़ाने और सूक्ष्म भारत-ऑस्ट्रेलिया सूक्ष्म

भारत ने ऑस्ट्रेलिया के साथ पांच खनिजों के उत्खनन एवं खोज का एग्रीमेंट किया।

रसायन निवेश भागीदारी के लिए अपनी मौजूदा प्रतिबद्धताओं को बढ़ाने पर भी सहमति व्यक्त की है। बयान में कहा गया है कि प्रस्तावित परियोजनाओं के माध्यम से ऑस्ट्रेलिया में संसाधित/प्रसंस्कृत सूक्ष्म खनिजों पर आधारित नई आपूर्ति श्रृंखलाएं कायम की जाएगी। इससे भारत के कार्बन उत्सर्जन कम करने और इलेक्ट्रिक वाहनों सहित वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने की योजनाओं में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, भारत के उपक्रम खनिज विदेश इंडिया लि. और सी.एम.ओ. ऑस्ट्रेलिया ने, मार्च 2022 में परस्पर समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद एक वर्ष की छोटी अवधि में मील का पहला पत्थर तय कर लिया है।

‘कश्मीर पर फैसला लेने का हक केवल भारत और पाकिस्तान को है’

अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा, कश्मीर मुद्दा कोई अंतर्राष्ट्रीय नहीं बल्कि दोनों देशों का आपसी मसला है

वॉशिंगटन नई दिल्ली, 12 मार्च। पाकिस्तान ने कश्मीर के मुद्दे को हर बड़े अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उठाया। लेकिन उसे मुंह की खानी पड़ी है। खुद पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलाल भुट्टो ने यह कहकर सनसनी फैला दी कि दुनिया के देश कश्मीर पर पाकिस्तान की बात नहीं सुनते हैं। इसी बीच अमेरिका ने कश्मीर को लेकर बड़ा बयान दिया है। अमेरिका ने कहा है कि भारत और पाकिस्तान को कश्मीर के मुद्दे पर आपस में मिलकर रचनात्मकता के साथ बातचीत करना चाहिए। अमेरिका के प्रेसिडेंट जो बाइडन प्रशासन ने कहा कि अमेरिका, भारत और पाकिस्तान के बीच सार्थक और रचनात्मक कूटनीति हो, इसका समर्थन करता है। इस बारे में अमेरिकी विदेश

‘वीरांगनाओं को भाजपा नेताओं ने इकट्ठा किया, यह राजस्थान को बदनाम करने की कोशिश है’

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बोले-राजस्थान जैसा पैकेज देश में कहीं भी नहीं है

जयपुर, 12 मार्च (का.प्र.)। राजस्थान में वीरांगनाओं के मुद्दे को लेकर चल रही राजनीति के बीच राजस्थान सरकार भी लगातार अपने बचाव में जुटी हुई है। इसी बचाव के तहत मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पुलवामा शहीदों की वीरांगनाओं को और से देवरां को नौकरा देने की मांग पर फिर सवाल उठाया है। मीडिया से बात करते हुए मुख्यमंत्री गहलोत ने बीजेपी नेताओं पर आरोप लगाते हुए कहा कि, वीरांगनाओं को भाजपा नेताओं ने इकट्ठा किया है। चुनावी साल में यह राजस्थान को बदनाम करने की कोशिश है, जबकि राजस्थान जैसा पैकेज कहीं नहीं है।

गहलोत ने कहा कि हमने शहीदों के आश्रितों को जो पैकेज दिए हैं, वह शायद देश के किसी राज्य में नहीं मिलता होगा। इंदिरा गांधी नगर परियोजना के पास सिंचित जमीन, पत्नी या पुत्र को नौकरा, हाउसिंग बोर्ड

■ गहलोत ने केंद्र सरकार से मांग की कि, देश के हर नागरिक के लिए सोशल सिव्योरिटी एक्ट लाया जाये, सभी को जीवन यापन जितना पैसा तो मिलना ही चाहिए।

का शहर में मकान, पेट्रोल पंप, शहीद स्मारक, आर्थिक सहायता, तमाम पैकेज दिए हैं। यही नहीं अगर शहीद की पत्नी गर्भवती है, उसको जो बच्चा पैदा होगा उसकी नौकरा भी गर्भ में रहते हुए भी आरक्षित कर दी गई है। शहीद का बच्चा पैदा होकर बड़ा होगा। तब तक उसकी नौकरा रिजर्व रहेगी। ऐसा फैसला हिंदुस्तान में कभी भी और कहीं

भी हुआ है क्या? मुख्यमंत्री ने बताया कि, मेरी जानकारी में आया है कि इन सभी वीरांगनाओं को बीजेपी नेताओं ने इकट्ठा किया है, क्योंकि अब चुनाव का वक्त है।

ये लोग अब चार साल बाद नौकरा क्यों मांग रहे हैं? इनसे कोई पूछे कि घटना 2019 में हुई उस वक्त मांग क्यों नहीं की? अब चार साल बाद आप मांग करके घरना दे रहे हो। पूरे राज्य और देश के लोगों को गुमराह कर रहे हो। ऐसा करके ये देश में राजस्थान की बदनामी करवा रहे हैं। ऐसी हरकतों के लिए जनता इनको आने वाले समय में जवाब देगी।

इसी के साथ मुख्यमंत्री ने ओल्ड पेंशन स्कीम के मुद्दे पर कहा कि, ओ.पी.एस. के संदर्भ में कई सीएम, वित्त मंत्री आलोचना कर रहे हैं। मेरा मानना है, जब 65 साल तक देश में ओपीएस लागू थी। तब भी देश आधुनिक बनने

की ओर आगे बढ़ रहा था। ये तब है, जब आजादी से पहले देश में एक सुई नहीं बनती थी। हम कहाँ तक पहुँच गए। कर्मचारियों को सिव्योरिटी देना सरकार की जिम्मेदारी है। इसे हम शेयर बाजार के भरोसे नहीं छोड़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि, मैं केंद्र सरकार से मांग करता हूँ कि देश के हर नागरिक के लिए सोशल सिव्योरिटी एक्ट लेकर आओ। सभी को जीवन यापन जितना तो पैसा मिलना ही चाहिए। आज हम विश्व गुरु बनने की बात कर रहे हैं। पहले हम अपने देश में रह रहे परिवारों को तो सिव्योर कर ले।

तेलंगाना के मु.मंत्री...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) उपचार दिया जा रहा है। बुलेटिन में बताया गया है कि के.सी.आर. सामान्य रूप से रिकवर कर रहे हैं और उनकी तबियत सामान्य बनी हुई है।

बैकटीरिया रोधी मॉलिक्यूल की खोज

हरिद्वार 12 मार्च (वार्ता)। उत्तराखंड के रुड़की स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) के शोधकर्ताओं ने एक नए जीवाणु प्रोटीन अणु (आई.आई.टी.आर. 00693) की खोज की है जो दवा प्रतिरोधी संक्रमणों से लड़ने में मदद कर सकता है। इस शोध का नेतृत्व प्रोफेसर रंजन पटानिया ने किया। उनके अलावा इस शोध में बायोसाइंसेस और बायोइंजीनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. रुड़की के महक सेनी, अमित गौरव, आशीष कोठारी, एम्स, ऋषिकेश बलराम जो उमर, एम्स, ऋषिकेश वर्मा गुप्ता, गवर्नमेंट मैडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, चंडीगढ़ अतिथित भूद्राचार्य, असम विश्वविद्यालय ने भी अहम योगदान किया।

कठोर स्क्रीनिंग प्रक्रिया के बाद खोजे गए अणु ने ग्राम-पॉजिटिव और ग्राम-नेगेटिव बैक्टीरिया की एक विस्तृत श्रृंखला के खिलाफ शक्तिशाली जीवाणु प्रोटीन गतिविधि दिखाई है, जिसमें कुछ सबसे अधिक संख्याग्रस्त दवा-प्रतिरोधी उपपेद भी शामिल हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने लंदन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) का उद्घाटन करने वाले हैं। साथ ही कर्नाटक में लगभग 16,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे।

मोदी करीब 4,130 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले चार लेन में सूरह-कुशलनगर राजमार्ग की आधारशिला भी रखेंगे। इस परियोजना से गंतव्यों के बीच यात्रा के समय को पांच घंटे से घटाकर केवल 2.5 घंटे करने की उम्मीद है।

वह बाद में कर्नाटक के उत्तरी हिस्से का भी दौरा करेंगे और 850 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से निर्मित आई.आई.टी. धारवाड़ का उद्घाटन करेंगे।

मोदी हबुली रेलवे स्टेशन पर सिद्धारूढ़ स्वामी मंच राष्ट्र को समर्पित करेंगे, जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड

नई दिल्ली, 12 मार्च। उद्योगपति रतन टाटा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का भी यूज करते हैं लेकिन, वे इस पर काफी कम एक्टिव रहते हैं। देश ही नहीं विदेशों में भी उनके चाहने वाले हैं। रतन टाटा को लोग कितना प्यार करते हैं उसका अंदाजा इस बात से ही लगा सकते हैं कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम में उनके 85 लाख से अधिक फॉलोअर्स हैं। आज हम आपको रतन टाटा और उनके सोशल मीडिया अकाउंट से जुड़ी एक हैरान करने वाली बात बताने जा रहे हैं। रतन टाटा को इंस्टाग्राम पर तो लाखों लोग फॉलो करते हैं लेकिन क्या आप जानते हैं कि खुद रतन टाटा किस फॉलो करते हैं। वे सिर्फ और सिर्फ एक अकाउंट को फॉलो करते हैं।

बता दें कि रतन टाटा जिस इंस्टा अकाउंट को फॉलो करते हैं वह किसी व्यक्ति का पर्सनल अकाउंट नहीं है। रतन टाटा सिर्फ टाटा ट्रस्ट इंस्टा अकाउंट को

■ रतन टाटा जिस एकमात्र इंस्टाग्राम अकाउंट को फॉलो करते हैं वह किसी का पर्सनल अकाउंट नहीं है।

■ रतन टाटा सिर्फ टाटा ट्रस्ट इंस्टा अकाउंट को फॉलो करते हैं। टाटा ट्रस्ट की स्थापना 1919 में हुई थी। रतन टाटा फिलहाल टाटा ग्रुप की सभी जिम्मेदारियों से हट चुके हैं लेकिन वे टाटा ट्रस्ट के कामकाज को अभी भी देखते हैं और उससे जुड़े हुए हैं। रतन टाटा, टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन भी हैं।

■ रतन टाटा के अकेले इंस्टाग्राम पर 85 लाख से ज्यादा फॉलोअर्स हैं।

फॉलो करते हैं। टाटा ट्रस्ट की स्थापना 1919 में हुई थी। रतन टाटा फिलहाल टाटा ग्रुप की सभी जिम्मेदारियों से हट चुके हैं लेकिन वे टाटा ट्रस्ट के कामकाज को अभी भी देखते हैं और उससे जुड़े हुए हैं। रतन टाटा टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन भी हैं।

आपको बता दें कि टाटा ट्रस्ट एजुकेशन, न्यूट्रिशन, हेल्थ, पर्यावरण जैसे कई क्षेत्रों में काम करता है। रतन टाटा इस ट्रस्ट के अलावा भी कई ट्रस्ट चलाते हैं। इन सभी ट्रस्ट का सिर्फ एक ही मकसद है कि समाज में बदलाव लाकर उसे और बेहतर बनाया जा सके।

बजट सत्र का दूसरा चरण आज से

नई दिल्ली, 12 मार्च (वार्ता)। संसद के बजट सत्र के दूसरे चरण की कार्यवाही सोमवार से शुरू होगी जिसमें लंबित पड़े विधेयकों को पारित कराया जाएगा।

सत्र का दूसरा चरण छह अग्रैल तक चलेगा और इस दौरान कुल 17 बैठकें होंगी। सूत्रों के मुताबिक इस दौरान 35 विधेयक पारित कराए जाने हैं जिसमें 26 राज्य सभा और नौ लोकसभा में लंबित हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करने के साथ ही

31 जनवरी को बजट सत्र शुरू हुआ था। सत्र का पहला चरण 13 फरवरी तक चला और इस दौरान कुल 10 बैठकें आयोजित हुईं।

सांसद सुधांशु...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) जाते हैं, जब से मोदी सरकार आयी है लोक कल्याणकारी योजनाओं के पैसों लाभाधिकियों के बैंक खाते के माध्यम से शत प्रतिशत प्राप्त हो रहे हैं। भारत में यूपीए सरकार में बम्ब ब्लास्ट व आतंकवादी हमलों होते थे, 2014 के बाद दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण न कोई बम ब्लास्ट और न आतंकी गतिविधियाँ हो रही है। भ्रष्टाचारी जेल जा रहे हैं और उनकी सम्पत्तियाँ जब्त हो रही है। जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटायी गई और अयोध्या में भव्य राम मंदिर बन रहा है।

‘शासन की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) पत्रकारों से बातचीत में कहा कि पुलवामा शहीदों की वीरांगनाओं को सहायता देने के मामले में कांग्रेस मुख्यमंत्री गहलोत का रवैया असंवेदनशील रहा जबकि उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों ने वीरांगनाओं से मिल कर घोषणा की थी। मुख्यमंत्री को दरियादिली दिखकर पुलवामा शहीदों की वीरांगनाओं से भीमिलना चाहिए था। जबकि गहलोत जी शहीदों की वीरांगनाओं को गुटों में बांटकर राजनीति कर रहे हैं, जो अशोभनीय है।

वीरांगनाओं की प्रमुख मांग में शहीदों की प्रतिमा लगाने का कार्य, स्कूलों का शहीदों के नाम पर नामकरण, गांव में सडक का नामकरण और परिजनों में से एक को नौकरा थी जिसको सरकार के ही मंत्रियों ने जाकर सहमति प्रदान की थी। सरकार को घोषणा की गई मांग को पूरी करनी चाहिए। सरकार के मंत्रियों को झुठी घोषणा नहीं करनी चाहिए थी। सिंह ने कहा कि शासन की अकर्मण्यता से जनप्रतिनिधियों पर हमले बढ़ रहे हैं जो लोकतंत्र में विनाशक है। वही इसके साथ ही साक्षी विधायक वेद प्रकाश सोलंकी, विधायक लाखन सिंह, नमो नारायण मीणा डॉक्टर किरोड़ी लाल मीणा से मिलने अस्पताल पहुंचे और उनकी कुशलक्षेम जानी।

समलैंगिक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) देने के कारण किसी मौलिक अधिकार का उल्लंघन नहीं होता है।